भारत-पाक युद्ध (1965)

प्र०- 1965 के भारत पाक युद्ध से प्राप्त राजनैतिक एवं सैनिक शिक्षाओं का वर्णन कीजिए।

पृष्ठभूमि या युद्ध के कारण - 1962 के चीन के आक्रमण को भारत अभी भूला भी नहीं था कि पाकिस्तान ने 1965 में पुनः आक्रमण कर दिया। इस आक्रमण के निम्न कारण थे - (1) कश्मीर समस्या का समाधान न होने के कारण भारत एवं पाकिस्तान के बीच तनाव बरकरार था। (2) 1965 के आम चुनाव में पाकिस्तानी जनमत जनरल अयूब खां की तानाशाही के विरुद्ध हो गया था। अतः जनता को गुमराह करने तथा उनका मन मोहने के लिए पाकिस्तान का भारत से युद्ध करना आवश्यक हो गया था। (3) चीन, पाकिस्तान को भारत के खिलाफ लगातार भड़काता रहता था। 26 मार्च 1965 को पाक ने कश्मीर का कुछ भाग उपहार में देकर चीन से सीमा समझौता भी कर लिया तथा भारत द्वारा कश्मीर के प्रति उठाये गये कदमों से पाकिस्तान को शंका हो गयी थी कि भारत पूरी तरह से कश्मीर को भारत में मिला सकता है, अतः उसने शीघ्र ही आक्रमण किया। (4) भारत की रक्षा पंचवर्षीय योजना प्रारम्भ हो चुकी थी तथा भारत की सैनिक तैयारी मजबूत हो रही थी। पाकिस्तान ने सोचा की चीन से तीन वर्ष पूर्व युद्ध लड़ने के कारण भारत अभी कमजोर है। अतः उसने तुरन्त आक्रमण का निर्णय लिया। (5) अमेरिका द्वारा दिये गये पैट्रन टैंक विश्व में सर्वश्रेष्ठ थे, इन टैंकों को अमेरिका ने पाकिस्तान को दिया था, जिससे पाकिस्तान को युद्ध में विजय का भरोसा था, अतः उसने शीघ्र आक्रमण करके भारत को पराजित करने का निर्णय लिया।

भारत-पाक युद्ध -: यद्यपि यह युद्ध अगस्त 1965 से छिट-पुट प्रारम्भ हो गया था किन्तु विधिवत पाकिस्तानी आक्रमण 1 सितम्बर 1965 को हुआ। यह युद्ध भारत पाक सीमा जिसकी लम्बाई 1300 मील है; जो भारत के चार राज्यों कश्मीर, पंजाब, राजस्थान, गुजरात से मिलती है, में हुआ। भारत-पाक 1965 का युद्ध खासतौर से टैंकों के युद्ध के लिए जाना जाता है। विभिन्न मोर्चों पर हुए संग्राम का विवरण निम्न प्रकार है -

पाकिस्तानी सेना द्वारा छम्ब क्षेत्र में आक्रमण -: कश्मीर को अलग कराने के लिए पाकिस्तान ने 800 टैंक एवं भारी तोपखाने के साथ 1 सितम्बर 1965 को छम्ब क्षेत्र पर भारी आक्रमण कर दिया। इस आक्रमण का पूरा उद्देश्य कश्मीर का भारत के अन्य क्षेत्रों से सम्पर्क काट देना था। इस योजना को पाकिस्तान ने "ऑपरेशन ग्राण्ड स्लैम योजना" का नाम दिया, योजनानुसार पाकिस्तानी सेनाएं 5 सितम्बर को जौरियाँ तक पहुँच गयी और वहाँ से अखनूर की ओर आगे बढ़ना प्रारम्भ कर दिया। पाकिस्तान के द्वारा छम्ब क्षेत्र के आक्रमण को कमजोर करने के लिए भारत ने पाक के लाहौर एवं स्यालकोट शहरों पर आक्रमण करने का निर्णय लिया। भारतीय वायुसेना ने इस दौरान शत्रु क्षेत्रों पर लगातार बमबारी करके स्थल सेना को भरपूर सहयोग दि

भारतीय सेना द्वारा लाहौर एवं स्यालकोट में आक्रमण -: भारतीय सेना ने 6 सितम्बर 1965 को ले० जनरल हरबख्स सिंह के नेतृत्व में प्रथमकोर ने जम्मू से आगे बढ़कर स्यालकोट पर आक्रमण कर दिया, तथा ले० जनरल जोगिन्दर सिंह के नेतृत्व में भारतीय सेना ने पंजाब से आगे बढ़कर लाहौर के शहर पर आक्रमण कर दिया। स्यालकोट की लड़ाई मे भारतीय सेना ने प्रातः से सायं एक दिन मे शत्रु के 66 टैंकों को नष्ट कर दिया। भीषण टैंक युद्ध के बाद फिल्लौरा एवं अल्हार नामक पाकिस्तानी चौकियों पर कब्जा कर लिया। फिल्लौरा युद्ध में ले० कर्नल तारापोर ने प्राणों की बलि देते हुए परमवीरचक्र प्राप्त किया।

भारतीय सेनाओं ने पंजाब की सीमा से आगे बढ़ते हुए तीन ओर से लाहौर पर आक्रमण कर दिया। पाकिस्तान ने लाहौर की सुरक्षा के लिए 45 मील लम्बी, 140 फीट चौड़ी तथा 15 फीट गहरी इच्छोगिल नहर का निर्माण करवाया था। पाक ने इस नहर का निर्माण टैंक विरोधी खाई के रुप में किया था। किन्तु भारतीय सेना शत्रु की मोर्चेबन्दी को तोड़ते हुए इच्छोगिल नहर को पार करते हुए लाहौर के बाहरी इलाकों पर पहुंच गयी। इस क्षेत्र पर भारतीय सेना ने डोगराई का महत्वपूर्ण संग्राम लड़ा था। तथा पाक के 12 मील क्षेत्र पर अधिकार कर लिया। भारत की दो अन्य सैनिक टुकड़ियों ने इच्छोगिल नहर काट कर पार करने में सफलता प्राप्त की, जिससे पाक सेना आश्चर्य चकित हो गयी।

खालरा वर्की क्षेत्र में संघर्ष -: खालरा वर्की क्षेत्र में पाक ने इच्छोगिल नहर को सीमेन्ट से मजबूत एवं पक्का कराया था। कंक्रीट से बने 12 पिलरों की रक्षा पंक्ति का सहारा लेकर शत्रु हमारे मोर्चे के किसी भी भाग पर स्वाचालित शस्त्रों से गोले बरसाने में सक्षम था। इस क्षेत्र में चौथी सिख बटालियन बहादुरी के साथ बाँधाओं को कुचलते हुए खालरा क्षेत्र के इस अन्दुरूनी भाग वर्की पर योजनाबद्ध ढंग से अधिकार करने में सफल हुए और 22 सितम्बर तक पाकिस्तान के 150 वर्गमील क्षेत्र पर भारत ने अधिकार कर लिया।

खेमकरन - कसूर क्षेत्र में संघर्ष -: खेमकरन क्षेत्र में आगे बढ़ते हुए पाक सेना ने सात सितम्बर को भारतीय सीमा पर जोरदार हमला किया। क्योंकि यहां पर अमेरिका द्वारा दिये गये पैट्रन टैंकों के सहारे पाक सेना आक्रमण कर रही थी किन्तु 9 सितम्बर से भारतीय सैनिकों ने पाक टैंकों को नष्ट करना प्रारम्भ कर दिया। भारत ने अमेरिकी टैंकों का जवाब अपने सेचुरिपन टैंकों से दिया। यहाँ पर भारी मात्रा में अमेरिकी टैंकों को नष्ट किया गया। पैट्रन टैंकों के युद्ध के इस स्थान को पैट्रन नगर के नाम से जाना जाने लगा। इसी क्षेत्र में वीर अब्दुल हमीद ने तीन पैट्रन टैंकों को तोड़कर एवं एक को नष्ट करके वीर गति को प्राप्त हुआ। तथा बाद में उन्हें परमवीर चक्र प्राप्त हुआ। खेमकरन-कसूर क्षेत्र की स्थिति ऐसी थी कि पाक का भूभाग निचाई में था; जहां पर भारतीय सेना ने पोजिशन लेकर पाक टैंकों को नष्ट कर दिया, और पाक सेना का मनोबल तोड दिया।

1965 के युद्ध में वायु सैन्य संक्रियाएँ -: इस युद्ध के समय भारतीय वायु सेना में 900 वायुयान थे जिसमें मुख्यत: मिग21 विमान तथा 550 लडाकू विमान शामिल थे। जबकि पाक सेना की वायुयानों की कुल संख्या 800 थी। जिसमें मुख्यत: सैबर जेट एवं स्टार फाइटर थे। पाकिस्तान के सैबर जेट एवं स्टार फाइटर भारतीय विमानों से अधिक उन्नततथा अच्छे किस्म के थे। किन्तु ये 35 से 40 हजार फीट की ऊँचाई पर ही अच्छी तरह से कार्य कर सकते थे जबकि स्थल सेना की सहायता के लिए 1000 फीट की ऊचाई पर उड़ना चाहिए था। इसी कारण ये विमान युद्ध में असफल सिद्ध हुए।

1965 के युद्ध में भारतीय सेना ने एयर मार्शल अर्जुन सिंह के नेतृत्व में भारतीय स्थल सेना को भरपूर सहयोग देने के साथ-2 पाकिस्तानी वायु सेना को निष्क्रिय बनाने का महत्व पूर्ण कार्य किया। जिस समय पाकिस्तानी टैंक इम्ब क्षेत्र में घुसने का प्रयास कर रहे थे। भारतीय सेना ने 24 उडाने भरकर इस आक्रमण को विफल कर दिया इसके अलावा 48 घंटे में भारतीय वायु सेना ने आकाश में अपना प्रभुत्व स्थापित कर लिया। तथा पाक वायु सेना को आकाश में उडने से लगभग रोक दिया। पाकिस्तान के चकलाला एवं सरगोधा हवाई अड्डे पर

भीषण बमबारी करके पाकिस्तान के 20 वायुयानों को नष्ट कर दिया तथा अनेक रडार केन्द्र को भी नष्ट कर दिया ~~तथा अनेक रडार केन्द्रों को भी नष्ट कर दिया~~ हमारी विमान भेदी तोपों ने तीन पाकिस्तानी जेट विमानों को मार गिराया। हमारी सेना ने पाक के अन्दर तक घुसकर मार करके शत्रु सेना को आश्चर्य चकित कर दिया। इस युद्ध में पाक के 77 वायुयान नष्ट हुए। जबकि भारत के 35 वायुयान नष्ट हुए।

ताशकन्द समझौता एवं युद्धविराम - संयुक्त राष्ट्र संघ के सहयोग से 23 सितम्बर 1965 को युद्ध विराम हुआ। पाकिस्तान के 462 टैंक नष्ट हुए जबकि भारत के 123 टैंक नष्ट हुए। इस युद्ध में भारत ने 690 वर्गमील भूक्षेत्र पर अधिकार कर लिया था। जबकि पाक ने भारत के 250 वर्गमील पर ही अधिकार किया था। इस युद्ध का अन्त ताशकन्द समझौते के द्वारा हुआ इस समझौते मे भारत के तत् कालीन प्रधान मंत्री लाल बहादुर शास्त्री तथा पाक राष्ट्रपति जनरल अयूब ने 10 जनवरी 1966 को हस्ताक्षर किये। इस समझौते में यह निश्चित किया गया कि भारत एवं पाक दोनों एक दूसरे को अपने जीते हुए क्षेत्र वापस कर देंगे। इस समझौते से शास्त्री जी को आघात पहुँचा। और उनकी हृदय गति रुक जाने से ताशकन्द में ही उनकी मृत्यु हो गयी।

युद्ध से प्राप्त राजनीतिक एवं सैनिक शिक्षाएं - यह युद्ध निर्णायक युद्ध न होते हुए भी इससे अनेक राजनीतिक एवं सैनिक शिक्षाएं प्राप्त होती है -

1. 1965 के युद्ध में भारत की विजय हुई इस विजय से 1962 के चीन युद्ध के पराजय का कलंक धुल गया, और भारत पुनः एशिया और अफ्रिका के नये देशों का नेता बन गया।
2. विजय सीधे श्रेष्ठ हथियारों से नहीं प्राप्त होती है, ~~बल्कि~~ बल्कि प्रशिक्षण से प्राप्त होती है। अमेरिका द्वारा दिये गये पैट्रन टैंकों एवं लडाकू वायुयान इस युद्ध में बेकार साबित हुए। क्यों कि पाक सेना उनको सही ढंग से चलाना नहीं जानती थी। युद्ध में विजय आत्म निर्भरता से प्राप्त होती है, न की दूसरे के सहयोग से। पाक ने चीन एवं अमेरिका के भरोसे भारत पर आक्रमण कर दिया, जिससे उसे पराजय का मुँह देखना पडा।
3. भारत को पाक के किसी भी समझौते पर विश्वास करके युद्ध की तैयारी बन्द नहीं करनी चाहिए। पाक भारत को जब कमजोर स्थिति में देखेगा, तो आक्रमण कर सकता है।
4. किसी भी युद्ध मे विजय प्राप्त करने के लिए स्थल, जल एवं वायु तीनों सेनाओं का सहयोग आवश्यक है। 1965 के युद्ध में जब पाक टैंकों ने इम्बक्षेत्र पर आक्रमण किया तो भारतीय वायु सेना ने एक दिन मे 28 उड़ानें भरकर पाक के 60 टैंकों को नष्ट करने मे भरपूर सहयोग दिया।

(11)

5: भारत ने इस युद्ध में युद्ध के केन्द्रीय करण के सिद्धान्त (सकेन्द्रण) का पालन करते हुए लाहौर एवं स्यालकोट में भारी मात्रा में सेना से आक्रमण करके शत्रु की इच्छोगिल नहर को तोड़कर पाक को आश्चर्य चकित कर दिया।

6: युद्ध में विजय प्राप्त करने के लिए वायु सेना बहुत महत्वपूर्ण होती है भारतीय वायुसेना ने इस युद्ध में आकाश में अपना पूरा वर्चस्व स्थापित कर लिया, पाक वायुसेना को आकाश में रोक दिया, जिससे भारत को विजय मिली।

7: इस युद्ध ने स्पष्ट कर दिया की कार्यवाही की सफलता के लिए स्थानीय जनता का सहयोग अत्यन्त आवश्यक होता है। पंजाब एवं कश्मीर की जनता ने भारतीय सैनिकों का भरपूर सहयोग करके उनका मनोबल ऊंचा रखा। जिससे भारत को सफलता प्राप्त हुई।